# संवाद : देशज गणतंत्र की ओर (2001-2026)

## A Silver Journey of Samvad towards Indigenocracy (2001-2026)

SAMVAD संवाद

रजत जयंती 25 2001-2026

**Samvad**

*Expression of Ethos and Ideology*

# ‘संवाद’ की पृष्ठभूमि : 25 वर्ष की संपन्न हुई यात्रा और अगले 25 वर्ष की भावी योजना एवं पहल

## पृष्ठभूमि

‘संवाद’ अपनी यात्रा की रजत जयंती मना रहा है। 2026 का साल ‘संवाद’ की विगत यात्रा से सीख कर आगे कदम बढ़ाने का साल है। यानी हमें यहां यह समझ बनानी है कि ‘संवाद’ ने अपने विगत ढाई दशकों में किन-किन विचारों को अमलीजामा पहनाने का काम किया और क्यों किया। इसके पीछे की दृष्टि क्या थी और ‘संवाद’ ने इस दृष्टि को दृष्टिकोण में कैसे बदला।

हमें यह बात समझने की जरूरत है कि ‘संवाद’ अचानक बनाई गई संस्था नहीं है। इसकी पृष्ठभूमि समझने के लिए हमें सन् 2000 और इसके पहले के एक दशक को समझना होगा।

‘संवाद’ बुनियादी बदलाव चाहने वाली जमातों में से एक है। ‘संवाद’ से जुड़े ट्रस्टी और उसके समर्थक  तथा शुभचिंतक तक ऐसी दुनिया बनाने के जज्बे से लैस हैं, जो मानव और मानव के बीच के शोषण, उत्पीड़न और अन्याय को समाप्त करना चाहते हैं। लेकिन यह महज चाहना भर नहीं है। बल्कि इस चाहना को आकार देने के लिए पूरे जज्बे के साथ प्रयासरत हैं। जंगल, पहाड़, नदी-नाले और बियाबान में विचरते हुए आम जनों से रिश्ता बना रहे हैं। वंचित और उत्पीड़ित समुदायों को उनके विचारों और परंपराओं को परिष्कृत करते हुए गांव के स्तर पर संगठित और प्रतिबद्ध बना रहे हैं।

‘संवाद’ ने माना है कि समाज बदलने की प्रक्रिया का मूलाधार है – व्यक्ति को बदलना। व्यक्ति के ‘स्व’ (सेल्फ) को संवेदनशील और समृद्ध बनाने तथा संवेदना

और समृद्धि की बुनियाद पर परिवार, गांव और उसके संकुल को सशक्त करना। यानी लोकतंत्र को महज एक तंत्र न समझ कर एक जीवन पद्धति मानना और उसे स्वअनुशासित बनाना। हम सब मानते हैं कि यह एक दुरूह और दीर्घकालिक प्रक्रिया है। बावजूद इसके लिए हमने यह रास्ता जानबूझकर चुना और इंडिजीनोक्रेसी जैसी अधुनातन परिकल्पना को जमीन पर उतारने का संकल्प ले कर गांव-गांव में फैल गए।

'संवाद', उन गांवों इलाकों को लक्षित क्षेत्र बनाया जो झारखंड जैसे प्रकृति और खनिज संपदा से संपन्न होते हुए भी यहाँ के लोग व्यवस्था की मार झेल रहे हैं और उन नीतियों के कारण यहाँ की धरती वीरान हो रही है। यहां के लोग प्रताड़ित और वंचित होते जा रहे हैं। उनके हाथ से जल, जंगल, जमीन और खनिज निकलता जा रहा है। वह मालिक से मजदूर और फिर मजबूर बनने की दिशा में धकेले दिए गए हैं और आज भी धकेले जा रहे हैं।

इन मुद्दों के संभावित समाधान के लिए हमने इंडिजीनोक्रेसी के तहत छह थिमेटिक (तात्विक) एरिया का चयन किया गया है। जिसे नीचे विस्तार से रखने की कोशिश की गयी है।

संक्षेप में कहें तो 'संवाद' महज एक संस्था (ट्रस्ट) भर नहीं है। यह एक 'इथोस' और 'आईडियोलॉजी' पर खड़ी एक ऐसी संस्था है जो 'प्रोजेक्ट' को 'प्रोसेस' में बदलते हुए तथा अपने 'कार्यकर्ताओं' को 'साथी' बनाते हुए उन्हें एक सामूहिक प्रतिबद्धता से लैस कर रही है। बुनियादी बदलाव की दिशा में सक्रिय धर्मिता (एक्टिविज्म) का अनुपालन कर रही है। हमारी कोशिश है कि 'कार्यकर्ता' 'कर्मचारी' बनकर महज नौकरी करने की मानसिकता का शिकार न हो।

'संवाद' की टीम यह जानती है कि इस बहकती और व्यक्तिवादी होती दुनिया में रिस्क बहुत है। लेकिन रिस्क न हो तो काम करने में आनंद (मजा भी कह सकते हैं) कम होता जाता है और अंततः कार्यकर्ता एक निराश-हताश कर्मचारी (कर्म+चारी) बनने लगता है। धीरे-धीरे ऐसे कर्मचारी अपने को मारने लगता है और अपने हृदय के भीतर की प्रकृति प्रदत्त मानवीय संवेदना को खोता चला जाता है।

## 'संवाद' के थिमेटिक एरिया : वैचारिक हस्तक्षेप

'संवाद' के निर्माण का काल (सन् 2001) पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यह काल संक्रमण के दौर से गुजर रहा था। एक ओर आर्थिक उदारीकरण के नाम पर भारत डब्ल्यूटीओ (वर्ल्ड ट्रेड ऑर्गेनाइजेशन) का सदस्य बन गया था, वहीं दूसरी

ओर उसके अनुरूप अपने देशी कानूनों और नियमों में धड़ाधड़ परिवर्तन करता जा रहा था। सन् 2000 में अपने देश में धड़ाधड़ तीन नए राज्य के गठन होने की घोषणा हो चुकी थी। तत्कालीन सरकार द्वारा उत्तराखंड (तब उत्तरांचल नामित किया गया था), छत्तीसगढ़ और झारखंड बनाने की पहल शुरू हो गई थी। इस फैसले के तहत नवंबर 2000 में उक्त नए राज्यों को आकार दे दिया गया।

इन घोषणाओं और राज्य गठन के बाद हमारी यह कोशिश थी कि तमाम बदलावकारी जमातों के बीच 'संवाद' स्थापित किया जाय और झारखंड के गठन के बाद झारखंड नवनिर्माण की दिशा में ठोस वैचारिक हस्तक्षेप किये जायें।

झारखंड में हम सबों की जमात ने यह फैसला किया कि हमें एक ऐसी संस्था का गठन करना चाहिए जो एक वैचारिक मंच के रूप में सकारात्मक और संगठित हस्तक्षेप करने की पहल करे। इसके लिए झारखंड की नामी गिरामी सक्रियधर्मी महिला, डॉ. रोज केरकेट्टा ने सक्रिय सक्रिय सहयोग दिया, और उनके नेतृत्व में 'संवाद' नाम से एक ट्रस्ट का गठन किया गया। इसके औपचारिक दस्तावेज एवं ट्रस्ट डीड झारखंड के जन पक्षीय वकील रश्मि कात्यायन ने तैयार किया। इस प्रकार 21 मार्च 2001 को 'संवाद' नामक एक ट्रस्ट निबंधित हो गया।

कुछ महीनों के बाद 'संवाद' की टीम ने अपने वैचारिक बहस के बाद छह जनमुद्दों पर काम करने का निर्णय लिया। ये मुद्दे हैं :–

1. स्वशासन
2. स्वावलंबन
3. स्वाभिमान
4. आजीविका
5. आजादी
6. आनंद

इन छह मुद्दों को समाहित करते हुए एक गंभीर और नवाचार के लिए प्रयोग करने वाले शब्द को ईजाद किया– 'इंडिजीनोक्रेसी'।

आइये जनमुद्दों को एक-एक कर समझें।

## 'संवाद' : महज एक संस्था नहीं, विचारों का संवाहक

'संवाद' एक लंबी वैचारिक प्रक्रिया की उपज है। इसके सभी संस्थापक ट्रस्टी और सलाहकार चार प्रकार के आंदोलनों में शिक्षित और प्रशिक्षित हुए हैं :–

**पहला** – लोकनायक जयप्रकाश के नेतृत्व में हुए सम्पूर्ण क्रांति की प्रक्रिया में;

**दूसरा** – झारखंड नवनिर्माण के आंदोलन में;

**तीसरा** – पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्द्धन अभियान में;

**चौथा** – स्वशासन सह गांव गणराज्य अभियान में।

‘सम्पूर्ण क्रांति’ व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन का सकारात्मक हस्तक्षेप रही है। जिसने सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, वैचारिक, नैतिक और राजनीतिक क्षेत्र में अपने विचारों और प्रक्रियागत आचरणों से एक मानदंड स्थापित किया है।

झारखंड के नवनिर्माण में ‘संवाद’ के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने न सिर्फ अपनी भागीदारी निभाई है, बल्कि इसमें महिलाओं और वंचितों के प्रखर नेतृत्व को, आगे लाने में वैचारिक हस्तक्षेप भी किया है।

तीसरा अभियान पर्यावरण से जुड़े मुद्दों का रहा है। ‘संवाद’ के कार्यकर्ताओं ने इस अभियान में जंगल बचाने, नदियों को बचाने और जमीन को उपजाऊ बनाने की दिशा में व्यापक अभियान चलाया है, जो आज भी जारी है। दर्जनों पदयात्राओं के माध्यम से सैकड़ों गांवों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझकर तात्कालिक और दीर्घकालिक हस्तक्षेप की तैयारी की है।

‘संवाद’ ने पूरे झारखंड में स्थानीय स्वशासन को मजबूत करने और आदिवासियत तथा मूलवासियत की सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा के लिए सैकड़ों गांवों में अखड़ा को सशक्त किया है एवं जीवन को विचारवान और जीविका को समृद्ध बनाने हेतु जमीनी पहल की है।

## स्वशासन

स्वशासन से संबंधित संवाद की परिभाषा कुछ लोगों /धड़ों के विचारों से भिन्न रही है। संवाद का मानना है कि स्वशासन हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। यह बुनियादी लोकतंत्र को सशक्त करने तथा उसे और अधिक गहरा बनाने की एक विधा है। यह एक सामुदायिक जीवन-पद्धति है। स्वशासन को किसी ढांचे में सीमित कर नियंत्रित करना स्वशासन को नेस्तनाबूद करना है। यह महज 'लोकल डेमोक्रेसी' नहीं है, जिसमें न तो कुछ लोकल है और न लोकल लोगों को वोकल बनाने का अवसर। 'लोकल डेमोक्रेसी' में लोकल लोगों को सत्ता और व्यवस्था के सामने हाथ पसारने और घुटने टेकने को विवश किया जाता है। इसमें 'लोक' को 'तंत्र' का मुखापेक्षी बना दिया जाता है।

‘संवाद’ इस दिशा में जिस गंभीरता और गहराई से हस्तक्षेप कर रहा है वह प्रोजेक्ट से प्रोसेस बनाने का वैचारिक अभ्यास है। इसे समझना हो तो मेढा-लेखा (गढ़चिरौली, महाराष्ट्र) से समझा जा सकता है। जिसने देश को एक दिशा दी है। जिसे समझने के लिए दर्जनों लोग वहां रोज जाते हैं। यहां यह समझना जरूरी है कि इस मेढा-लेखा में लगभग 30 वर्ष का समय और दर्जनों विचारकों को श्रमसाध्य प्रक्रिया

चलानी पड़ी। जिसमें से हमारे साथी मोहन हीराबाई हीरालाल की अहम भूमिका थी, जो अब इस दुनिया में नहीं हैं। वहां जो साथी काम कर रहे हैं उनमें अधिकांश साथी सम-लक्ष्य, सम-बोध तथा सम-विचारधर्मी हैं। यह जनता सरकार की वह परिकल्पना है जिससे जेपी ने पिरामिड को सीधा करने की बात कही थी। वे मानते थे कि आज लोकतंत्र को उल्टा पिरामिड की तरह खड़ा कर दिया गया है जिसके कारण नागरिकों का अभिक्रम दबता जा रहा है। गांव को कमजोर किया जा रहा है। इसलिए उन्होंने बिहार आंदोलन के दौरान 'जनता सरकार' की परिकल्पना प्रतिपादित की थी और साफ तौर पर यह कहा था कि जनता ही सरकार है। इसलिए उन्होंने गांव में ग्राम सभा का गठन करना और उसे सशक्त कर लोकतंत्र को और गहरा तथा सुदृढ़ बनाना है। जिसे बाद में स्वशासन अभियान के दौरान मोहन हीराबाई हीरालाल, गढ़चिरौली ने यह नारा दिया था कि – *"दिल्ली, मुंबई में हमारी सरकार! हमारे गांव में हम ही सरकार"!!* स्वशासन का यह मूल मंत्र है। इसमें सभी वयस्क नागरिक अपनी लोकतांत्रिक जिम्मेदारी निभाएंगे और गांव की कमियों और खामियों को दूर करते हुए एक स्वशासी गांव का निर्माण करेंगे।

## स्वावलंबन

'संवाद' का यह मानना है कि झारखंडी समाज हजारों वर्षों से स्वावलंबी रहा है– मन, तन और धन के मामले में भी। इसके कई कारण हैं :–

- पहला, यहां की प्रकृति और जलवायु ने यहां ऐसी धरोहर दी है जिसका समुचित उपयोग किया जाय तो यहां के लोग कभी भुखमरी के शिकार नहीं हो सकते।
- दूसरा, यहां के लोग अपनी धरोहर से इतना लगाव रखते रहे हैं कि उसकी रक्षा के लिए वे अपनी जान तक दे सकते हैं, लेकिन धरोहर नहीं।
- तीसरा, यहां के लोगों को अपने प्राकृतिक उपदानों का विवेकपूर्ण सदुपयोग करना आता है और यही कारण है कि यहां के लोग हजारों वर्षों से समृद्ध और स्वावलंबी रहे हैं। जो इस समाज की ताकत रही है।

लेकिन पिछले तीन सौ वर्षों में बहिरागत और विदेशी लोगों ने आकर इन्हें कथित तौर पर सभ्य बनाने की जो छद्म कोशिश की – यह उनका (बहिरागतों) अहंकार और व्यावसायिक स्वार्थ था। उन्हें न तो यहां के समाज की समझ थी और न यहां की प्रकृति के साथ उनका लगाव था। परिणामत: बहिरागत लोगों ने अपनी चिंतनधारा को यहां थोपनी शुरू कर दी। अपने वर्ग/वर्ण/स्वार्थ की पूर्ति हेतु यहां के

लोगों को असभ्य, बर्बर और पिछड़ा कहकर झारखंडी लोगों के स्वाभिमान को वे सब धक्का पहुंचाने लगे। परिणामत: ऐसे बहिरागत और विदेशी लोगों को यहां के लोगों ने 'दिक्कु' कहकर संबोधित करना शुरू किया।

'संवाद' और सहमना संस्थाओं के लोगों ने इस बारीकी को समझने के लिए झारखंड में कई पदयात्रायें/यात्राएं की। हजारों लोगों से 'संवाद' बनाया और इस नतीजे पर पहुंचा कि समुदाय के अभिक्रम और स्वाभिमान को जगाये बिना यहां का समुचित विकास संभव नहीं है। थोपा गया कानून और थोपी गई विकास की प्रक्रिया से यहां का भला नहीं हो सकता और न उसे कथित मुख्यधारा में लाया जा सकता है, वैसे कथित मुख्यधारा की संकल्पना भी एक बड़ा धोखा है।

झारखंड के स्वावलंबन का बड़ा आधार जंगल रहा है। यहां की खेती-किसानी भी जंगल पर आधारित रही है। इसलिए झारखंडी समाज को स्वावलंबी बनाने की दिशा में कोई ठोस पहल करनी है तो जंगल, जानवर और खेती किसानी के अंतर्संबंधों को समझना जरूरी है। जिसमें खनिज का मर्यादित सदुपयोग कर झारखंड को हजारों वर्ष तक कुटीर एवं ग्रामोद्योग केंद्रों के माध्यम से स्वावलंबी बनाए रखा जा सकता है।

इसलिए 'संवाद' ने स्वावलंबन की दृष्टि से चार आयामों को आकार देने की पहल शुरू की है :–

- पहला, समुदाय को सशक्त और संगठित करना। इसका प्रमुख माध्यम होगा – ग्राम सभा और उसका फेडरेशन।
- दूसरा, खेती-किसानी को सशक्त करने के लिए महिलाओं और युवाओं को विचारों से लैस करना एवं उसे अलग अलग बैनर तले संगठित और प्रशिक्षित करना। इसलिए 'महिला किसान संगठन' का निर्माण किया गया है ताकि समाज में व्याप्त घरेलू हिंसा एवं संपत्तिगत हिंसा (पितृसत्तात्मक हिंसा भी कह सकते हैं) को कम किया जा सके।
- तीसरा, जैविक खेती और फलोउद्यान को बढ़ावा देना। झारखंड की जमीन और जलवायु जैविक खेती के लिए काफी उपयुक्त है। यहां के पुराने बीज, बीजों के संग्रहण की विधा और तकनीक को यहां के लोगों ने अभी भी कुछ हद तक बचा कर रखा है। जैविक खेती जिसे आज 'एग्रो इकोलाजी' कहा जा रहा है– यहां की प्राकृतिक परिवेश के अनुकूल है। 'संवाद' की इस प्रक्रिया से झारखंड के लगभग 4000 किसान जुड़े हुए हैं। युवाओं में वैचारिक आधार प्रदान करने के लिए 'ग्रीन क्लब' और 'ग्रीन-स्कूल' जैसे नवाचार को सशक्त करने की कोशिश में 'संवाद'

लगा है। इसके साथ वैकल्पिक बाजार (इंडिजीनोमार्ट) की स्थापना करनी है।

- चौथा, गांवों के पुराने और लुंज-पुंज ढांचों का जीर्णोद्धार करना। इसमें अखड़ा और अन्य सांस्कृतिक अभिक्रमों को आगे बढ़ाना तथा तालाबों की उड़ाही, पुराने कूपों की मरम्मति और भू-क्षरण को रोकने के लिए मेड़बंदी करना शामिल है। वृक्षारोपण को बढ़ावा देना भी हमारी महत्वपूर्ण पहल है। इसके अलावे वैद्यों को एक साथ लाकर 'इंडिजिनोपैथी' के अभ्यास को मजबूत करना भी 'संवाद' की एक महत्वपूर्ण पहल है।

'संवाद' इस दृष्टिकोण से स्वावलंबन के क्षेत्र में नवाचार अपना रहा है। वैचारिक प्रतिबद्धता 'संवाद' का संबल है। व्यवस्था की कुव्यवस्था पर सवाल खड़ा करना हम सबों की फितरत है।

## स्वाभिमान

'संवाद' स्वाभिमान को सशक्त आकार देने की कोशिश में लगा है। अपने देश में वर्षों से वंचित व्यक्ति और दबे कुचले समाज की गरिमा के साथ खिलवाड़ किया जाता रहा है। जबकि इन समुदायों के श्रम, बुद्धि-विवेक और कौशल के बल पर वह समाज फूलता फलता रहा है, जो आज कथित रूप से संपन्न और संभ्रांत कहलाता है। वर्ण का वर्गीकरण और जाति के ऊंच-नीच ने सबसे ज्यादा कहर ढाया है। इसने न सिर्फ वंचित समुदाय के महिला-पुरुषों के स्वाभिमान के साथ खिलवाड़ किया है बल्कि कथित संभ्रांत लोगों ने अपने परिवार और समाज की महिलाओं को भी 'दोयम दर्जे का व्यक्ति' बनाकर हाशिये पर धकेल दिया है।

'संवाद' ऐसी प्रताड़ना, भेदभाव और घरेलू हिंसा के खिलाफ हमेशा मुखर रहा है। 'संवाद' मानता है कि हर इंसान एक व्यक्ति के रूप में – चाहे वह महिला हो, पुरुष हो या उभयलिंगी के रूप में जन्म लेता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से गरिमा के साथ जीने और अपनी जीविका चलाने का जन्मसिद्ध अधिकार है। प्रकृति ने सबों के लिए इसे समान रूप से प्रदान किया है। इसके साथ खिलवाड़ करने की छूट किसी को नहीं दी जा सकती।

इस दृष्टि से समाज और समुदाय को संगठित करने की दिशा में 'संवाद' ने एक मानदंड स्थापित किया है। अपने संस्थागत ढांचे से लेकर सामाजिक और सामुदायिक ढांचों में भी इस मूल्य और मान को समुचित स्थान देने की एक पहल/कोशिश की है। और यही कारण है पिछले 25 वर्षों तक सतत् प्रयासरत रहने के बाद अब इस निर्णय पर पहुंचा है कि अपनी रजत जयंती के अवसर पर 'संवाद' के ढांचे में सभी पदों

पर महिलाओं को पदस्थापित करने का सर्वसम्मत निर्णय लिया है। और उन्हें अपने अनुभव और अनुभूति के बल पर आगे बढ़ने का सुअवसर प्रदान करने का मार्ग खोला है। उनके स्वाभिमान को परिवार, समाज और संस्था में गरिमापूर्ण स्थान मिले इसलिए इनको अंतिम रूप दिया है।

## आजीविका

आजीविका इंसान की पहली जरूरत है। इस जरूरत की पूर्ति के लिए इंसान को आज न सिर्फ फजीहतों का सामना करना पड़ रहा है बल्कि उसे अपने गांव और परिवार को छोड़कर पलायन करने को विवश होना पड़ रहा है। उसे अपनी माँ, मातृभूमि और अपने परिवेश को छोड़ने को विवश किया जा रहा है और यह सब हो रहा है आजीविका के लिए। सरल भाषा में कहें तो रोजी-रोटी के लिए। लेकिन हम सबों का यह मानना है कि आजीविका का मतलब महज रोजी रोजगार नहीं है। इसके गंभीर और व्यापक अर्थ हैं। इसका संबंध जहां एक ओर रोजी-रोटी का है वहीं दूसरी ओर प्रकृति, प्राकृतिक उपादानों के शोषण-दोहन से जुड़ी व्यवस्था से भी है। विकास की नीति, रीति और पद्धति से भी है। इसलिए इसे समग्रता और गंभीरता से समझने की जरूरत है।

'संवाद' के कार्यकर्ताओं और निर्णायक मंडल का मानना है कि आजीविका जितनी संप्रभु और स्वायत्त होगी, इंसान उसी अनुपात में इंसानियत से लैस होता चला जाएगा।

इसका उलट भी समझना चाहिए कि आजीविका जितनी गुलामी और शोषण के प्रवृत्ति की शिकार होगी तथा प्रकृति और प्राकृतिक उपादानों से काट दी जाएगी, उसी अनुपात में इंसान संवेदनहीन और अमानवीय बनता चला जाएगा। यहां यह समझना जरूरी है कि मानव अगर अपने को प्रकृति का जेता मानकर उसके साथ निर्मम व्यवहार करता है, तो वह अंततः अपने पैरों पर ही कुल्हाड़ी मार रहा होता है।

इसीलिए आजीविका के धरोहरों और उपादानों पर गंभीर विमर्श कर इसे आगे बढ़ाने की जरूरत है। जल, जंगल, जमीन और वायु प्रकृति प्रदत्त धरोहर हैं। जिसे प्रकृति ने हमें सौंपा है, यानी हम सब इसके संरक्षक हैं, मालिक नहीं। हम उक्त उपादानों को सहेजने वाले ट्रस्टी हैं, स्वामी नहीं।

इसलिए 'संवाद' ने उक्त विचारों को आदर्श के रूप में अपनाया। पहला काम यही चुना कि प्रकृति और उसके धरोहरों की रक्षा की जाए और इसको विनष्ट करने, हड़पने वाली जमातों को एक्सपोज किया जाए। इसलिए हम सबों ने यह नारा दिया–

*"जल, जंगल, जमीन की लूट*
*नहीं किसी को इसकी छूट"*

इस नारे का अर्थ बहुत साफ है कि इन धरोहरों को लूट से बचाना है। लूटने वालों के खिलाफ उठ रही आवाज को संगठित करना है और संगठन के बल पर प्रकृति को दिनानुदिन समृद्ध करते जाना है। प्रकृति जितनी अधिक समृद्ध होगी, इंसान की आजीविका उतनी ही सुदृढ़ और संपन्न होगी।

इसी दृष्टि से 'संवाद' ने एग्रो-इकोलॉजी के काम को आगे बढ़ाया। हजारों किसानों को संगठित किया और सैकड़ों महिलाओं को संगठित कर तथा उन्हें शिक्षित और प्रशिक्षित कर उनके हक के लिए व्यापक वैचारिक एकता कायम की। आज 'संवाद' 800 गांव में इस काम को आगे बढ़ा रहा है। जैविक खेती-किसानी-बागवानी और जड़ी-बूटी वाटिका को प्रश्रय दे रहा है।

इस अर्थ में देखें तो 'संवाद' ने समाज में एक गुणात्मक परिवर्तन लाने की कोशिश की है। आजीविका को इंसान की आजादी और संप्रभुता से जोड़कर संवेदनशील बनाया है।

## आजादी

आजादी इंसान का जन्मसिद्ध अधिकार है। इस अधिकार को छीनने की कोई भी कोशिश एक अमानवीय कर्म है। तानाशाही प्रवृत्ति है। इसलिए 'संवाद' ने आजादी को तीन स्तरों पर देखा है:–

**पहला** – दूसरों की गुलामी से मुक्ति

**दूसरा** – अपनों की गुलामी से मुक्ति

**तीसरा** – अपनी गुलामी से मुक्ति

इन तीनों तरह की गुलामी से मुक्ति के लिए संघर्षरत रहना होगा। सतत संघर्ष जारी रखना होगा। 'संवाद' इस दिशा में शिक्षण-प्रशिक्षण के तहत 'स्व' को संवेदनशील बनाते हुए, परिवार और रिश्तेदारों को भी जागरूक और प्रतिबद्ध बनाने में लगा है।

इसके आगे समाज को उत्तरदायी और परस्परावलंबन की चेतना से लैस करना होगा। उसमें राष्ट्रीय एवं वैश्विक नागरिकता का बोध पैदा हो यह पहल करनी होगी। व्यक्ति जितना जिम्मेदार होता जाएगा, वह उसी अनुपात में स्वयं को आजाद महसूस कर सकेगा। यानी इंसान की आजादी अन्योन्याश्रय संबंधों पर निर्भर है, परस्परावलंबन पर निर्भर है। आजादी कभी भी एकल और एकांगी नहीं होती।

व्यक्ति को स्वानुशासित और स्वशासी बनाकर ही आजादी को समृद्ध और टिकाऊ बनाया जा सकता है।

इस अर्थ में इंसान होने की पहली शर्त है – आजाद होना, स्वाधीन होना।

## आनंद

आनंद की अनुभूति इंसान को अन्य प्राणियों से अलग करती है। आज मनुष्यों को आनंद से विमुख करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। साजिश भी कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। ऐसा इसलिए किया जा रहा है ताकि इंसान धीरे-धीरे संवेदन शून्य होता जाए तथा यह भूल जाए कि वह एक चिंतनशील और विवेकशील प्राणी है। यही अनुभूति इंसान को उत्तरोत्तर सशक्त और समृद्ध बनाती है और यहीं से पैदा होता है– आनंद! कमजोर और भीतर से खोखला इंसान आनंद की अनुभूति नहीं कर सकता।

इसलिए 'संवाद' ने अपने शिक्षण-प्रशिक्षण की विधा में 'स्व' को सशक्त और समृद्ध बनाने की प्रक्रिया को शामिल किया है। हम क्या हैं? हम क्यों हैं? हमारी भूमिका क्या है? – एक इंसान के नाते इन सवालों का जवाब ढूंढने में मदद करना 'संवाद' की तमाम प्रक्रियाओं का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

'संवाद' मानता है कि आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु जितने अर्थ और साधन की जरूरत है उतना जरूर अर्जित करना चाहिए। लेकिन अपने लोभ, लालच और संग्रह के प्रति इंसान का नजरिया विलासितापूर्ण नहीं होना चाहिए।

विलासिता से क्षणिक सुख मिल सकता है लेकिन अंततः वह बेचैनी ही पैदा करती है। भ्रष्टाचार को जन्म देती है। आनंद की अनुभूति को कुंद करती है। इसलिए पाने और त्यागने के बीच एक संतुलन बनाकर ही इंसान आनंदित रह सकता है। अन्यथा वह नीरस, निःसठ और सौंदर्यबोध विहीन होता चला जाता है।

ऐसी भौतिकवादी प्रवृत्ति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता/मेधा के खिलाफ आत्मिक रसायन और जैविक बुद्धिमतता को सतत सक्रिय बनाने की दिशा में प्रयासरत है- 'संवाद'। इसके तहत प्रकृति का साक्षात्कार करना, सृष्टि और ब्रह्मांड से दैनंदिन जीवन में संलाप करना हमारी विधाओं का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसे हर शिक्षण और प्रशिक्षण की कार्यशालाओं में जोड़ा जाता है। जिसे आज की भाषा में एक्सपोजर कहा जाता है।

हम सबों का मानना है कि व्यक्ति जितना आनंद की अनुभूति करेगा उतना ही वह शांतचित्त, गंभीर, सृजनशील और जिम्मेदार बनता चला जाएगा।

# ‘संवाद’ : 2026 से 2050 तक
# दृष्टि, दिशा और पहल

‘संवाद’ अपनी रजत जयंती 2026 के अप्रैल में मना रहा है। इसी वर्ष ‘संवाद’ एक नई यात्रा की शुरुआत एक नई टीम के साथ कर रहा है। इस टीम के पहरुए और नेतृत्वकर्ता महिलायें होंगी। अप्रैल 2025 की फतेहपुर में आयोजित बैठक में ‘संवाद’ ने दो महत्वपूर्ण निर्णय लिए :–

**पहला** – ‘संवाद’ का पूरा दारोमादार और नेतृत्व महिलाएं संभालेंगी। पुरुष परिधि में रहेगा।

**दूसरा** – ‘संवाद’ अपने वर्तमान कार्यक्षेत्र के 16 जिलों में आवश्यकता और क्षमता के अनुरूप स्वतंत्र और स्वायत्त संस्थाएं खड़ी करने के लिए सहमना साथियों को प्रोत्साहित करेगा।

ये दोनों निर्णय ‘संवाद’ की दूरगामी दृष्टि और दिशा को दर्शाता है। पिछले पृष्ठ पर ‘संवाद’ के दर्शन, विचार और पहल की चर्चा की गई है। इसलिए उसके आलोक में ही आगे के कदम बढ़ाने हैं ।

‘संवाद’ का थिमेटिक एरिया जिसकी चर्चा पहले की गई है वह आगे भी बरकरार रहेगी। लेकिन आगामी वर्षों में देश और दुनिया में जो ज्वलंत समस्याएं आने वाली हैं उस पर ध्यान देते हुए उसके निराकरण हेतु कुछ और थिमेटिक एरिया पर पहल कदमी करेगा। इनमें सबसे प्रमुख है – जलवायु संकट, जो आज एक वैश्विक मुद्दा है। इस पर ‘संवाद’ अपने सहमना संगठनों के साथ मिलकर तात्कालिक और दीर्घकालिक कदम उठाएगा।

## जलवायु संकट

जलवायु संकट हमारे लिए पहले से ही चिंता का विषय रहा है। इस पर हम सबों की पहल जारी है लेकिन हम सबने (कार्यकर्ताओं, सहमना संगठनों और दाता संस्थाओं) यह माना है कि इस पर और ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है। इसके तहत हम सबों ने निम्न नवाचार के तहत अपनी प्रक्रिया को सघन बनाने का मन बनाया है :–

- एग्रो इकोलॉजी को व्यापक रूप से बढ़ावा देना।
- झारखंड में बढ़ रहे बंजरीकरण एवं मरुस्थलीकरण के खतरे को कम करने के लिए तात्कालिक और दीर्घकालिक हस्तक्षेप करना।

- भू-क्षरण को रोकने के तहत जल-संरक्षण, भू-संरक्षण और सामुदायिक जरूरत की पूर्ति हेतु बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण करना।
- जस्ट ट्रांजिशन की अवधारणा पर समझ विकसित करना और इस विषय पर चल रही राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय बहसों को जनमुखापेक्षी एवं  जन उपयोगी बनाने की दिशा में पहल करना।

## पितृसत्ता और जातिवाद

दूसरा महत्वपूर्ण आयाम है – पितृसत्तात्मक और जातीय व्यवस्था को समाप्त और कमजोर करने के लिए ठोस पहल करना।

हमारा मानना है कि इन दोनों मुद्दों को झारखंड के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में समझना होगा और उसके अनुरूप कदम उठाने होंगे। अभी तक के अनुभव और समझ के आधार पर हम सब इन नतीजे पर पहुंचे हैं कि झारखंड में पितृसत्ता के खात्मे के लिए निम्न पहलकदमी होगी :–

- महिलाओं का सशक्त संगठन खड़ा करना होगा। विभिन्न प्रकार के महिला संगठन का निर्माण करना होगा। इसके लिए असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के बीच पेशा – आधारित संगठन बनाने की जरूरत हो सकती है और इन संगठनों की फेडरल बॉडी का निर्माण किया जा सकता है। इन महिला संगठनों के माध्यम से पितृसत्ता के खिलाफ बहस तेज की जा सकती है। घरेलू और सामुदायिक संपत्ति/ संपदा पर महिलाओं को अधिकार दिलाकर पितृसत्ता को कमजोर किया जा सकता है।
- जहां तक झारखंड में जातीय व्यवस्था की बात है तो उसकी जकड़न यहां कमजोर थी। लेकिन पिछले कुछ दशकों में बहिरागत लोगों तथा दक्षिणपंथी ताकतों के घुसपैठ के कारण जातीय भेद-भाव और जातीय-संकीर्णता बढ़ी है। इसके खिलाफ संगठनों को जागृत और सशक्त करने की जरूरत है।

## महिला संस्था का निर्माण एवं सशक्त करना

झारखंड में गिनी-चुनी महिला संस्थाएं हैं। इन संस्थानों ने बेशक पिछले कुछ दशकों में सराहनीय कार्य किए हैं। लेकिन यह भी सच है कि महिला संस्थाओं के गठन की प्रक्रिया गतिमान नहीं हो सकी हैं। यह एक चिंता की बात है। इस चिंता को चिंतन में बदलते हुए महिला संस्थाओं का जाल बिछाना पड़ेगा और उन सबों का संजाल (नेटवर्क) भी खड़ा करना होगा। 'संवाद' इस दिशा में गहराई से चिंतन कर रहा है और

अगले कुछ वर्षों में 'संवाद' की ओर से जो संस्थाएं खड़ी करने की कोशिश की जाएगी उनमें से अधिकांश संस्थाएं महिला प्रधान होंगी।

हम सबों का मानना है कि संस्था बनाना और संस्था को प्रभावकारी ढंग से चलाना तथा प्रतिबद्धतापूर्वक आगे बढ़ाना – ये तीनों अलग-अलग विधाएं हैं। इसके साथ ही संस्थाओं में कार्यरत कार्यकर्ताओं को शिक्षित और प्रशिक्षित करने की जरूरत है। हम सबों का अनुभव है कि इस दिशा में सतत् और क्रमबद्ध शिक्षण और प्रशिक्षण हेतु उपयोगी पाठ्यक्रम बनाने होंगे। महिलाएं इसमें लीड लें। संवेदनशील और प्रतिबद्ध पुरुष कार्यकर्ता उसमें सहयोगी भूमिका निभाएं, डिक्टेट न करें।

## गैर दलीय राजनीतिक चेतना का संवाहक बने 'संवाद'

'संवाद' के साथियों का मानना है कि पिछले 3 दशकों में वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र संकीर्ण हुआ है। इसे जानबूझकर कमजोर किया गया है और आज भी किया जा रहा है। लोकतंत्र को महज 'चुनाव जीतना' भर मान लिया गया है। नागरिकों को उपभोक्ता और लाभुक (बेनिफिशियरी) बनाकर छोड़ दिया गया है। यह लोकतंत्र, समता और न्याय के दर्शन के खिलाफ है। ऐसा कदम न सिर्फ लोकतंत्र को कमजोर करता है बल्कि 'लोक' को अराजनीतिक, परावलंबी और गैर जिम्मेदार बनाता है।

इन बातों को पढ़कर कुछ लोग यह आरोप 'संवाद' पर गढ़-मढ़ सकते हैं कि 'संवाद' राजनीति कर रहा है। तो हम यहां साफ कर देना चाहते हैं कि मनुष्य न सिर्फ सामाजिक प्राणी है बल्कि एक राजनीतिक प्राणी भी है। हमारे नायक लोकनायक जयप्रकाश का ऐसा ही मानना है। लेकिन वे इसे समझाते हुए यह संदेश देते हैं कि राजनीति को दल की सीमा में समेट कर रखना राजनीति की अधूरी समझ है। इसलिए उन्होंने दलीय राजनीति से आगे 'दलविहीन राजनीति' की परिभाषा गढ़ी – एक ऐसी राजनीति जो महज सत्ता केंद्रित राजनीति नहीं बल्कि 'लोकसत्ता केंद्रित राजनीति' हो। 'संवाद' इस दिशा में ठोस पहल करेगा और देश दुनिया भर के सहमना संगठनों और संस्थाओं के साथ मिलकर लोक केंद्रित राजनीति और लोकतंत्र को तंत्र केंद्रित से विलग करते हुए 'लोक' केंद्रित 'तंत्र' बनाने हेतु की सुव्यवस्थित विमर्श चलाएगा। इसे जन केंद्रित राजनीति की तरह आगे बढ़ाने की दिशा में सकारात्मक अभिक्रम लगाएगा।

'संवाद' की पहल और अभिक्रम को आगे बढ़ाने के लिए निम्न कार्यक्रम और गतिविधियां चलाई जाएगी:–

## स्व का विकास करना

- सबों को शिक्षा और पढ़ाई के प्रति आकर्षित करना
- इसमें पुस्तकालय (पुस्तक और डिजिटल) की स्थापना गांव और पंचायत के स्तर पर करना– यानी 'विचार आपके द्वार' को सुव्यवस्थित कर सरल और सहज बनाना।
- गांव के स्तर पर अध्ययन मंडल का निर्माण करना।
- सभी पुस्तकालयों, वाचनालयों एवं अध्ययन मंडल का प्रखंड स्तर पर संकुल (क्लस्टर) बनाना।
- उभरते नेतृत्व को बौद्धिक हस्तक्षेप के लिए आकर्षक और प्रभावी अभिव्यक्ति की विधा से लैस करना।
- जिम्मेदार नागरिक (सिटिजन) बनाने की दिशा में अभ्यास करने की कला बोध पैदा करना।
- बच्चों और किशोर को मानसिक और शारीरिक रूप से सशक्त बनाने का अभियान चलाना।

## पारिवारिक परिवेश को स्वस्थ बनाना

- व्यक्ति को परिवार और परिजनों के प्रति संवेदनशील बनाना।
- बच्चों का पोषण और शिक्षण ठीक से हो सके, इसके लिए अनुकूल माहौल बनाना।

- बच्चों में पारिवारिक और सामुदायिक चेतना विकसित करना कि इंसान भी प्रकृति का ही हिस्सा है, इसलिए प्रकृति को बचाना और समृद्ध करना इंसान का जैविक और नैतिक दायित्व है।
- प्रत्येक परिवार में पोषण वाटिका का निर्माण करना।
- प्रत्येक परिवार और उसके सदस्यों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध करवाने की व्यवस्था करना।
- प्रत्येक परिवार के हर सदस्य की जरूरत के अनुरूप हवा, तापरोधी और रोशनी युक्त आवास का निर्माण करवाना।
- प्रत्येक आवास में एक आंगन की व्यवस्था सुनिश्चित करना। (यानी आवास का डिजाइन ऐसा बनवाना)।
- परिवार के सभी सदस्यों में परस्परावलंबन की भावना विकसित करना।

## सामाजिक अभिक्रम

- समुदायों में सामाजिक चेतना का विकास करना।
- प्रत्येक गांव और समाज में लोक संगठन जैसे – ग्राम सभा, टोला सभा का निर्माण करना तथा उसे सशक्त बनाना।
- वरिष्ठ नागरिकों का सम्मान सुनिश्चित करना।
- सरकारी प्रतिष्ठानों / इकाईयों के प्रति संवेदनशील और जिम्मेदार बनाना ।
- वंचित समुदायों और वर्गों में वर्ग चेतना विकसित करना।
- सांस्कृतिक  केंद्र जैसे सामुदायिक भवन और अखड़ा का निर्माण करना।
- जातीय भेदभाव, विषमता (लैंगिक सहित) को कम करने के प्रति लोगों को मुखातिब करना।
- यथा संभव कुटीर एवं ग्रामीण उद्योगों को विकसित करना (यह स्थानीय संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर होगा।)
- समुचित स्वास्थ्य सुविधा मुहैया करवाना।
- पास पड़ोस में इंडिजीनोमार्ट (हाट-बाजार) विकसित करने के लिए माहौल बनाना तथा उसे स्थापित करना।
- महिला, किशोर-किशोरियों और युवाओं के लिए 'ग्रीन क्लब' और 'ग्रीन पाठशाला' का निर्माण करना।

## आर्थिक अभिक्रम

- घर, परिवार और गांव स्वनिर्भर हो इसके लिए वातावरण तैयार करना।
- स्थानीय उपज को जैविक दिशा में मोड़ना और उसके लिए प्रत्येक परिवार में पशुपालन, कुक्कुट पालन की व्यवस्था करना/ करवाना।
- फसलों-सब्जियों के रख-रखाव हेतु सौर ऊर्जा, वैकल्पिक ऊर्जा आधारित संयंत्र और सुविधाओं को विकसित करना।
- सौर एवं अन्य रिन्यूएबल ऊर्जा के माध्यम से गांव को स्वावलंबी बनाना।
- प्रत्येक गांव में एक अर्थ-कोष, अनाज-भंडार का निर्माण करना।
- प्रत्येक पंचायत में जैविक परंपरागत बीज भंडार का निर्माण करना।
- प्रत्येक गांव में एक चारागाह और बथान की व्यवस्था करना।
- सभी बंजर और गैर कृषि भूमि पर फलदार और समाज उपयोगी पेड़-पौधों को लगवाना।
- हाट-बाजारों का संकुल (क्लस्टर विकसित) करना एवं इंडिजीनोमार्ट जैसी वैकल्पिक बाजार व्यवस्था को सशक्त करना।

## गैर दलीय राजनीतिक पहल

- प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को जिम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में चेतना जागरण का कार्य करना।
- लोगों में संविधान के मूल्यों और उद्देशिकाओं का तात्विक समझ विकसित करना।
- किशोर-किशोरियों में लोकतंत्र, संविधान तथा देश-दुनिया की व्यवस्थाओं के प्रति समझ विकसित करना।
- सर्वधर्म समभाव को अंगीकार करना तथा सेकुलर राजनीति की चेतना विकसित करना।
- गांव और पंचायत के स्तर पर बूथ कमेटियों का गठन और उसे सशक्त करना।
- सभी मतदाता निर्भीक और स्वविवेक से मतदान कर सकें, ऐसा माहौल बनाना।
- देश और दुनिया की राजनीतिक दशा और दिशा को समझना और समझना।

[**नोट** : इसके अलावे हर तीन वर्ष में प्रत्येक कार्यक्रमों की गहरी समीक्षा की जाती रहेगी और तात्कालिक जरूरतों के अनुरूप आवश्यक संशोधन और परिवर्द्धन किया जाता रहेगा। जनोपयोगी कार्यक्रम जोड़े जाते रहेंगे।]

# 25 years Journey of 'Samvad' with self governance and Future way-forward for Self-Reliance with Climate Resilience Agro-ecology towards Just Society

## Background

'SAMVAD' is celebrating the silver jubilee of its journey. The year 2026 is a year to take forward new steps by learning from SAMVAD's past journey. In other words, we need to develop an understanding of which ideas SAMVAD has worked to put into practice over the past two and a half decades, and why it did so. What was the vision behind these efforts, and how did SAMVAD transform this vision into a concrete approach?

It is important to understand that 'SAMVAD' is not an institution that was created suddenly. To grasp its background, we need to understand the year 2000 and the decade preceding it.

'SAMVAD' is one of the collectives that seek basic change. The trustees associated with 'SAMVAD', along with its supporters and well-wishers, are driven by the resolve to build such a world–one that seeks to end exploitation, oppression, and injustice between human beings. However, this is not merely a matter of aspiration. Rather, with full commitment and passion,

they are actively striving to give concrete shape to this vision. Moving through forests, hills, rivers, streams, and remote terrains, they are building relationships with ordinary people. By refining the ideas and traditions of marginalized and oppressed communities, they are organizing them at the village level and nurturing a sense of commitment and collective purpose.

'Samvad' believes that the foundation of the process of social transformation lies in transforming the individual. This means making the individual's "self" sensitive and enriched, and on the basis of sensitivity and enrichment, empowering the family, the village, and its larger collective. In otherwords, democracy should not be understood merely as a system, but as a way of life, and it should be made self-disciplined. We all acknowledge that this is a difficult and long-term process. Nevertheless, we consciously chose this path and, with a resolve to bring a contemporary concept like Indigenocracy onto the ground, spread out from village to village.

SAMVAD identified as its focus areas those villages and regions which, despite being rich in nature and mineral resources–such as Jharkhand–are places where people continue to bear the brunt of the system. Due to prevailing policies, the land here is becoming barren, and the people are increasingly being oppressed and deprived. Water, forests, land, and minerals are steadily being taken out of their hands. They are being pushed–and continue to be pushed–from being owners to becoming laborers, and eventually to a state of helplessness.

To address these issues and explore possible solutions, we selected six thematic areas under the framework of Indigenocracy, which will be elaborated upon below.

In brief, SAMVAD is not merely an institution (or trust). It is an organization grounded in a distinct **ethos** and **ideology**, one that transforms "projects" into ongoing processes and turns its "workers" into "companions," equipping them with a sense of collective commitment. It practices active engagement

(activism) aimed at fundamental change. Our effort is to ensure that a “worker” does not fall into the mindset of being merely an “employee” who views the work as just a job.

The SAMVAD team understands that in this drifting world, increasingly moving toward individualism, there is considerable risk involved. But without risk, the joy of working (one may even call it pleasure) gradually diminishes. In the end, the activist begins to turn into a disillusioned and frustrated employee (a mere karm-chari). Slowly, such an employee starts to destroy their own inner self, losing and erasing the naturally endowed human sensitivity that resides within the heart.

## SAMVAD’s Thematic Areas – Ideological Interventions

A close look at the period when SAMVAD was founded (2001) makes it clear that this was a time of transition. On the one hand, in the name of economic liberalization, India had become a member of the WTO (World Trade Organization). On the other hand, the country was rapidly amending its domestic laws and regulations to align with this membership.

In the year 2000, the formation of three new states in India was announced in quick succession. The government of the time initiated the process of creating Uttarakhand (then named Uttaranchal), Chhattisgarh, and Jharkhand. Under this decision, these new states were formally constituted in November 2000.

Following this announcement and the creation of the states, our effort was to establish dialogue among various transformative collectives and to take concrete initiatives toward the reconstruction of Jharkhand after its formation. This required deliberate ideological interventions.

In Jharkhand, our collective decided that there was a need to establish an institution that could function as an ideological platform and take initiatives for positive, organized interventions. For this purpose, the renowned and active woman of Jharkhand,

Dr. Rose Kerketta, extended her active support, and under her leadership, a trust named "SAMVAD" was formed. The formal documents and trust deed were prepared by Jharkhand's people-oriented lawyer Rashmi Katyayan. Thus, on 21 March 2001, a trust named SAMVAD was formally registered.

A few months later, after extensive ideological deliberations, the SAMVAD team decided to work on six people-centric thematic Area.

*These thematic Area are:*

1. Self-governance
2. Self-reliance
3. Self-respect
4. Livelihood
5. Freedom
6. Joy

By bringing these six issues together, a serious and innovative conceptual term was coined: **"Indigenocracy."**

Let us now try to understand these people's issues one by one.

**SAMVAD : Not Merely an Institution, but a Carrier of Ideas**

SAMVAD is the outcome of a long ideological process. All its founding trustees and advisors have been educated and trained through four major streams of movements:

1. The process of the *Total Revolution* led by Loknayak Jayaprakash Narayan.
2. The Jharkhand statehood and reconstruction movement.
3. The environmental conservation and regeneration movement.
4. The self-governance and village republic movement.

The "*Total Revolution*" was a positive intervention aimed at a basic transformation of the system. Through its ideas and process-oriented practices, it established benchmarks across social, economic, cultural, educational, ideological, ethical, and political spheres.

In the reconstruction of Jharkhand, hundreds of SAMVAD's activists have not only played an active role but have also made

conscious ideological interventions to ensure strong leadership by women and marginalized communities, and to take this process forward in an empowered manner.

The third campaign has focused on environmental issues. In this campaign, SAMVAD's activists have carried out extensive movements to protect forests, save rivers, and restore the fertility of the land – a process that continues even today. Through dozens of padyatras (foot marches), they have sought to understand the socio-economic conditions of hundreds of villages and have prepared both immediate and long-term interventions.

Across Jharkhand, SAMVAD has worked to strengthen local self-governance and to protect the cultural identity of Adivasis and indigenous communities. In hundreds of villages, it has revitalized the akhra (traditional community space) and undertaken grassroots initiatives to make life more thoughtful and livelihoods more prosperous.

## Self-Governance

SAMVAD's understanding of self-governance differs from the views of certain individuals or groups. SAMVAD believes that self-governance is our birthright. It is a method of strengthening and deepening basic democracy–a way of community life. To confine it within rigid structures and control it is to undermine and destroy the very essence of self-governance. It is not merely "local democracy," in which there is neither anything truly local nor any real opportunity for local people to raise their voices. Such "local democracy" forces local people to stretch out their hands and kneel before power and authority, making them dependent on the system. It turns the people into supplicants before the apparatus of governance.

The seriousness and depth with which SAMVAD intervenes in this direction is an ideological practice of transforming projects into processes. To understand this, one can look at Medha-

Lekha (Gadchiroli, Maharashtra), which has shown a direction to the entire country. Dozens of people visit the village every day to learn from this experience. It is important to understand that Mendha-Lekha took nearly 30 years and the sustained, laborious efforts of dozens of thinkers. One of our comrades, Mohan, is no longer with us. (Most of the companions working there shared common goals, understanding, and ideological commitment.)

This represents the concept of people's government, which Jayaprakash Narayan described as "straightening the pyramid." He believed that democracy today has been erected like an inverted pyramid, due to which citizens' agency is being suppressed and villages are being weakened. Therefore, during the Bihar Movement, he articulated the idea of Janata Sarkar (People's Government) and clearly stated that the people themselves are the government. For this reason, he emphasized the formation of Gram Sabhas in villages and their empowerment, so as to deepen and strengthen democracy. Later, during the self-governance movement, Mohan Hirabai Hiralal of Gadchiroli gave the slogan:

**"Our government is in Delhi and Mumbai… But in our village, we ourselves are the government."**

This is the core mantra of self-governance. Under it, all adult citizens assume their democratic responsibilities and, by addressing the shortcomings and weaknesses of the village, work toward building a truly self-governing village.

## Self-Reliance

SAMVAD believes that Jharkhandi society has been self-reliant for thousands of years–in mind, body, and resources. There are several reasons for this:

- **First**, the region's nature and climate have bestowed such a rich natural heritage that, if used appropriately, the people here could never fall prey to hunger.

- **Second**, the people of this region have remained so deeply attached to their heritage that they are willing to sacrifice even their lives for it, but never their legacy.
- **Third**, the people here know how to use natural resources judiciously and with wisdom. This is why they remained prosperous and self-reliant for thousands of years—this has been the strength of this society.
- **However**, over the last three hundred years, outsiders and foreign forces arrived and made a deceptive attempt to "civilize" the people here–an effort driven by their own arrogance and commercial interests. They neither understood the local society nor had any emotional bond with the region's nature. As a result, they began imposing their own modes of thinking. To serve their class, caste, and vested interests, they branded the local people as uncivilized, barbaric, and backward, thereby attacking the self-respect of the Jharkhandi people. Consequently, such outsiders and foreigners came to be referred to as dikku by the local communities.
- To understand these nuances in depth, people from SAMVAD and like-minded organizations undertook several padyatras (journeys on foot) across Jharkhand. They engaged in dialogue with thousands of people and arrived at the conclusion that meaningful development in the region is not possible without awakening the community's agency and self-respect. Imposed laws and imposed models of development cannot bring well-being here, nor can they integrate the region into the so-called mainstream (which itself is a major illusion). The most telling examples are the failure of the Forest Rights Act in Jharkhand and the framing of PESA rules only after 29 years.
- A major foundation of Jharkhand's self-reliance has been its forests, and agriculture here has traditionally been forest-based. Therefore, if any concrete initiative is to be

taken toward making Jharkhandi society self-reliant, it is essential to understand the interrelationships among forests, wildlife, and agriculture. With the limited and responsible use of minerals, Jharkhand can be kept self-reliant for thousands of years through cottage and village industries.

**Accordingly, 'SAMVAD' has begun shaping four key dimensions of self-reliance:**

- **First**, empowering and organizing communities, primarily through the Gram Sabha and its federations.
- **Second**, equipping women and youth with ideas to strengthen agriculture, and organizing and training them under different banners.
  - For this purpose, the **Women Farmers' Organization** was formed to reduce domestic violence and property-related violence (which may also be termed patriarchal violence) prevalent in society.
- **Third**, promoting organic farming and horticulture. Jharkhand's land and climate are highly suitable for organic agriculture. Traditional seeds and indigenous methods of seed preservation are still partially preserved by local communities. Organic farming–now referred to as agroecology–is well aligned with the region's natural environment. Through this process, nearly **4,000 farmers** in Jharkhand are associated with SAMVAD. To provide an ideological foundation among youth, SAMVAD is also working to strengthen innovations such as **Green Clubs** and **Green Schools.**
- **Fourth**, restoring old and dilapidated village structures. This includes revitalizing akhra and other cultural institutions, desilting ponds, repairing old wells, and constructing embankments to prevent soil erosion. Promoting plantation and afforestation is also a key initiative. In addition,

bringing traditional healers together to strengthen the practice of **Indigenopathy** is another concrete initiative of SAMVAD.

From this perspective, SAMVAD is adopting innovative approaches in the field of self-reliance. Ideological commitment is SAMVAD's source of strength, and questioning systemic misgovernance is part of our collective nature.

## Self-Respect

SAMVAD is actively working to give concrete shape to the idea of self-respect. For centuries in our country, the dignity of deprived individuals and oppressed communities has been repeatedly violated. Ironically, it is on the strength of the labor and skills of these very communities that the society–today described as affluent and elite–has prospered. The classification of people into varnas and the hierarchies of caste have caused the greatest damage. Not only has the self-respect of women and men from marginalized communities been trampled upon, but so-called elite sections have also reduced the women of their own families and societies to "second-class persons."

SAMVAD has always been outspoken against such oppression, discrimination, and domestic violence. SAMVAD believes that every human being is born as a person–whether woman, man, or of diverse gender identities–and therefore has a birthright to live with full dignity and to sustain their livelihood. Nature has bestowed this right upon everyone, and no one can be allowed to violate it.

From this perspective, SAMVAD has set a benchmark in organizing society and communities. From its institutional structure to social and community frameworks, it has consciously made efforts to give due place to these values and principles. This is why, after 25 years of continuous engagement, SAMVAD has now arrived at a unanimous decision: on the occasion of its Silver Jubilee, all positions within SAMVAD's organizational structure

will be held by women. A pathway has been opened for them to move forward on the strength of their own experience and lived understanding, ensuring that their self-respect is accorded a dignified place within the family, society, and the institution.

## Livelihood

Livelihood is a human being's most basic need. To fulfill this need, people today are not only facing humiliation and hardship, but are also being forced to migrate–leaving behind their villages and families, their mothers, their motherland, and their natural surroundings. All of this is happening in the name of livelihood–simply put, for earning daily bread. However, we believe that livelihood does not merely mean employment or income. It has deeper and wider meanings. On one hand, it is linked to food and survival, and on the other, it is connected to systems of exploitation and extraction of nature and natural resources. It is also linked to development policies, approaches, and models. Therefore, it needs to be understood with seriousness and in a holistic manner.

The members and decision-making body of SAMVAD believe that the more sovereign and autonomous a livelihood is, the more humane a person becomes. Conversely, the more a livelihood is shaped by slavery, exploitation, and separation from nature and natural resources, the more insensitive and inhuman a person becomes. It is important to understand that when humans consider themselves conquerors of nature and treat it ruthlessly, they are ultimately striking an axe at their own feet.

For this reason, there is a need to engage seriously with the foundations and resources of livelihood. Water, forests, land, and air are nature-given heritages entrusted to us by nature. We are their custodians, not their owners. We are trustees responsible for their protection, not masters.

SAMVAD has therefore adopted these ideas as guiding

principles. The first task it chose was to protect nature and its heritages, and to expose those forces that destroy and plunder them. This is why we collectively raised the slogan:

**"No one has the right**
**to loot water, forests, and land."**

The meaning of this slogan is clear: these natural heritages must be protected from plunder. The voices rising against those who loot them must be organized, and through collective strength, nature must be made increasingly prosperous day by day. The richer nature becomes, the more secure and abundant human livelihoods will be.

It is for this reason that we have advanced the work of agroecology. Thousands of farmers have been organized, and hundreds of women have been brought together, educated, and trained, building a broad ideological unity around their rights. Today, SAMVAD is carrying this work forward in around **800 villages**, promoting organic farming, agriculture, horticulture, and herbal gardens.

In this sense, SAMVAD has sought to bring about a qualitative transformation in society–by linking livelihood with human freedom and sovereignty, and by making it more humane and sensitive.

## Freedom

Freedom is a birthright of every human being. Any attempt to take away this right is an inhuman act and reflects a tyrannical tendency. Therefore, SAMVAD understands freedom at three levels:

1. Freedom from the domination of others.
2. Freedom from the domination of one's own people.
3. Freedom from one's own inner bondage.

To be liberated from all three forms of bondage, one must remain engaged in continuous struggle. SAMVAD works in this

direction through education and training–by making the "self" more sensitive, and by awakening and building commitment among families and relatives as well.

Beyond this, society must be made responsible and imbued with a consciousness of mutual interdependence. Efforts must be made to cultivate a sense of national and global citizenship. The more responsible a person becomes, the more they will feel free in the same measure. In other words, human freedom depends on relationships of mutual dependence and reciprocity. Freedom is neither solitary nor one-sided.

Only by making individuals self-disciplined and self-governing can freedom be enriched and sustained. In this sense, the first condition of being human is to be free and self-determined.

## Joy

The experience of joy distinguishes human beings from other living creatures. Today, there are constant attempts to alienate humans from joy–one would not be exaggerating to call them conspiracies. This is done so that people gradually become numb and forget that they are thinking and discerning beings. Yet it is this very experience that steadily empowers and enriches human beings–and from this arises joy. A weak and hollow person cannot experience joy.

For this reason, SAMVAD has incorporated methods to strengthen and enrich the "self" within its education and training practices. Helping individuals seek answers to questions such as *Who are we? Why do we exist? What should our role be as human beings?* is a central component of all SAMVAD's processes.

SAMVAD believes that one should earn as much wealth and resources as are necessary to meet essential needs. However, a person's attitude toward greed, accumulation, and excess should not be indulgent. Luxury may provide momentary pleasure, but ultimately it breeds restlessness, gives rise to corruption,

and dulls the experience of joy. Only by maintaining a balance between acquiring and letting go can a person remain joyful. Otherwise, human beings gradually become insipid, rigid, and devoid of a sense of beauty.

In the face of such materialistic tendencies and artificial intelligence, SAMVAD is striving to keep spiritual chemistry and organic intelligence continuously active. Under this approach, encountering nature and engaging in daily dialogue with creation and the cosmos form an important part of our practices. These are integrated into every educational and training workshop—what we today refer to as exposure.

We believe that the more a person experiences joy, the more calm, reflective, creative, and responsible they become.

## SAMVAD : 2026 to 2050
## Vision, Direction, and Initiatives

SAMVAD is celebrating its Silver Jubilee in April 2026. From 2026, it is embarking on a new journey with a new team. This team will be led and safeguarded by women. In the Fatehpur meeting held in April 2025, SAMVAD took two important decisions:

1. The entire responsibility and leadership of SAMVAD will be taken over by women.
2. In the 16 districts where SAMVAD is currently active, it will encourage like-minded partners to establish independent/ autonomous institutions, according to need and capacity.

These two decisions reflect SAMVAD's long-term vision and direction. In the previous sections, SAMVAD's philosophy, ideas, and initiatives have already been discussed; therefore,

future steps must be taken in the light of that very framework.

SAMVAD's thematic areas, as discussed earlier, will remain intact. However, keeping in mind the pressing challenges that are likely to emerge in the country and the world in the coming years, SAMVAD will also initiate work in some additional thematic areas to address them. One of these is the **climate crisis,** a global issue. On this, SAMVAD, together with its like-minded organizations, will take both immediate and long-term measures. The first steps will be in the field of energy through **Just Transition**, and in the livelihood sector through **Agroecology.** Both will be implemented with equality, justice, and democracy at their core.

## Climate Crisis

The climate crisis has already been a matter of concern for us. While initiatives are ongoing, all of us–activists, partner organizations, and donor institutions–have acknowledged that much greater attention is needed. Accordingly, we have decided to intensify our processes through the following innovations:

- Promoting **agroecology**
- Reducing the growing threat of **desertification** in Jharkhand
- Preventing **soil erosion** through water harvesting, soil conservation, and large-scale plantation to meet community needs
- Developing an understanding of **Just Transition**, and making national and international debates around it people-centric and socially useful

## Patriarchy, Casteism, and Communalism

The second major area of intervention is to take concrete steps to dismantle or weaken patriarchy, the caste system, and communalism.

We believe that these issues must be understood specifically in the context of Jharkhand, and actions must be

taken accordingly. Based on our experiences and understanding so far, we have arrived at the conclusion that the following initiatives are necessary to dismantle patriarchy in Jharkhand:

Strong and empowered women's organizations must be built. Different forms of women's collectives need to be established. This may require forming profession-based organizations among women working in the unorganized sector, and subsequently creating federal bodies of these organizations. Through these women's collectives, debates against patriarchy can be intensified. By ensuring women's rights over household and community property and resources, patriarchy can be significantly weakened.

As far as the caste system in Jharkhand is concerned, its grip was historically weak here. However, over the past few decades, due to the infiltration of outsiders and right-wing forces, caste-based discrimination and narrow caste identities have increased. There is a need to awaken and strengthen organizations to counter this trend.

## Communalism

Communalism was not a part of Jharkhand's public life earlier. However, over the last 50 years, as a result of well-planned conspiracies, it has been taking on an increasingly dangerous form. The sense of religious tolerance and fraternity is being weakened, which runs counter to Jharkhandi life values.

Therefore, SAMVAD is taking concrete initiatives in this direction as well. Active and sensitive efforts are being made to ensure that Gram Sabhas can promote an inclusive way of life and evolve as spaces of coexistence and mutual harmony.

## Building and Strengthening Women's Institutions

There are only a limited number of women's organizations in Jharkhand. Undoubtedly, these institutions have done commendable work over the past few decades. However, it is also true that the process of forming new women's institutions

has not been dynamic or continuous. This is a matter of concern. Transforming this concern into thoughtful action, there is a need to spread a network of women's institutions and to build a strong collective platform among them. SAMVAD is deeply reflecting in this direction, and in the coming years, most of the institutions that SAMVAD seeks to establish will be women-led organizations.

We believe that establishing an institution and running it effectively and advancing it with commitment are distinct disciplines. Alongside this, there is a need to educate and train the activists working within these institutions. Our collective experience shows that for this purpose, continuous and sequential education and training programs must be developed through relevant curricula. Women should take the lead in this process, while sensitive and committed male activists should play a supportive role–not a directive one.

## SAMVAD as a Carrier of Non-Party Political Consciousness

The companions of SAMVAD believe that over the past three decades, democracy has narrowed at the global level. It has been deliberately weakened and continues to be so. Democracy has come to be understood merely as "winning elections." Citizens have been reduced to consumers, beneficiaries, and voters. This stands against the philosophy of democracy, equality, and justice. Such an approach not only weakens democracy but also renders the people apolitical and irresponsible.

Upon reading this, some may accuse SAMVAD of engaging in politics. We therefore wish to state clearly that human beings are not only social beings but also political beings–this was also the belief of our mentor, Loknayak Jayaprakash Narayan. However, while explaining this, he emphasized that confining politics within the limits of political parties reflects an incomplete understanding of politics. This is why he articulated the concept

of **"party-less politics"** – politics not centered merely on power, but on **people's power** (lokshakti).

In this direction, SAMVAD will take concrete initiatives and, together with like-minded organizations and institutions across the country and the world, will undertake systematic deliberations to promote people-centered politics and democracy–separating them from system-centered approaches and working toward building a people-centered system. Through this, SAMVAD will actively advance positive engagements in the direction of people-centric politics.

**To carry forward SAMVAD's initiatives and engagements, the following programs and activities will be undertaken:**

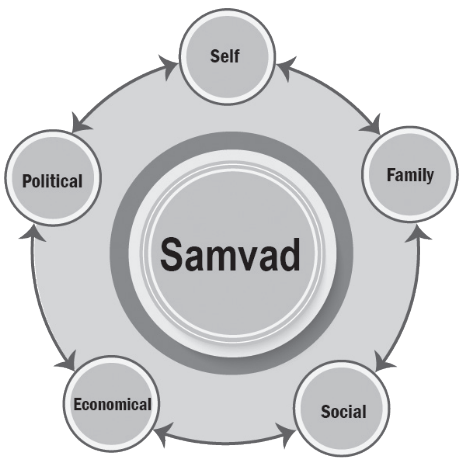


## For the Development of the Self

- Encouraging everyone to develop an interest in education and learning.
- Establishing libraries (both physical and digital) at the village and panchayat levels—systematizing and simplifying the idea of "Ideas at Your Doorstep."
- Forming study circles at the village level.

- Creating block-level clusters of all libraries, reading rooms, and study circles.
- Equipping emerging leaders with skills of effective and creative expression for intellectual intervention.
- Cultivating a sense of practice-oriented awareness toward becoming responsible citizens.
- Launching campaigns to strengthen children and adolescents at mental, physical, and ethical levels.

## Creating a Healthy Family Environment

- Making individuals sensitive and responsible toward their families and relatives.
- Creating conditions that enable proper nutrition and education for children.
- Instilling a sense of family and community consciousness among children, fostering an attraction toward nature, and developing the understanding that humans are also a part of nature–therefore, protecting and enriching it is a biological and moral responsibility.
- Establishing a nutrition garden in every household.
- Ensuring access to safe drinking water for every family and its members.
- Facilitating the construction of homes with adequate air circulation and natural light, according to the needs of each family member.
- Ensuring that every household has an open courtyard (i.e., promoting courtyard-centered housing designs).
- Fostering a sense of mutual interdependence among all members of the family.

## Social Initiatives

- Creating social consciousness within communities.
- Establishing & strengthening people's organizations such

as Gram Sabhas & Tola Sabhas in every village or community.

- Respecting and honoring senior citizens.
- Cultivating sensitivity and responsibility toward government institutions and agencies.
- Building class consciousness among marginalized communities and groups.
- Constructing cultural centers such as community halls and akhra.
- Engaging people to reduce caste-based discrimination and inequalities (including gender inequality).
- Developing cottage and rural industries wherever possible (depending on the availability of local resources).
- Ensuring access to appropriate healthcare facilities.
- Creating a conducive environment to develop and establish Indigenomarts (local haats/markets) in nearby areas.
- Establishing Green Clubs and Green Schools for women, adolescents, and youth.

## Economic Initiatives

- Creating an environment in which households, families, and villages become self-reliant.
- Steering local produce toward organic practices and ensuring arrangements for livestock and poultry rearing in every household.
- Developing solar energy–based systems and facilities for the storage and preservation of crops and vegetables.
- Making villages self-reliant through solar and other renewable energy sources.
- Establishing an economic fund and grain bank in every village.
- Creating traditional organic seed banks in every panchayat.
- Ensuring the availability of a common grazing land (charagah/bathan) in every village.

- Planting fruit-bearing and socially useful trees on all barren and non-agricultural lands.
- Developing clusters of haat-bazaars (local markets).

## Political Initiatives

- Undertaking awareness-building activities to make every adult a responsible citizen.
- Developing a substantive understanding of the values and Preamble of the Constitution among people.
- Enhancing adolescents' understanding of democracy, the Constitution, and the governance of the country and the world.
- Embracing interfaith harmony and fostering consciousness for secular politics.
- Forming and strengthening booth-level committees at the village and panchayat levels.
- Creating an environment where all voters can cast their votes fearlessly and with independent judgment.
- Understanding the political conditions and directions of the country and the world.

▪▪▪

# संवाद : एक परिचय

'संवाद' ट्रस्ट रजिस्ट्रेशन एक्ट 1882 के अंतर्गत निबंधित है। इसका निबंधन दिनांक 21 मार्च 2001 को रांची में हुआ है।

## संवाद का उद्देश्य

- समतावादी और न्यायमूलक समाज की स्थापना के लिए विभिन्न जनसंगठनों, समूहों, संस्थाओं एवं व्यक्तियों को संगठित करना तथा इनके बीच समन्वय स्थापित करना।
- समता, लैंगिक समानता, स्वतंत्रता, न्यायमूलक तथा भाईचारा व बहनापा की स्थापना हेतु लोगों को जागरूक करना।
- शोषण, अन्याय, अत्याचार से मुक्त समाज की स्थापना करना तथा देशज सांस्कृतिक अस्मिता को स्थापित करना।
- परंपरागत पद्धति को बिना छेड़े सामाजिक-आर्थिक तथा पर्यावरणीय तंत्र को विकसित करना। इसके लिए सामाजिक कार्यकर्ता, वैज्ञानिक, इंजीनियर, बुद्धिजीवी तथा कलाकार की तलाश करना तथा इनके विचारों एवं अनुभवों को जनता के साथ आदान-प्रदान करना।
- सतत् विकास तथा देशज सांस्कृतिक अवधारणा को ग्राम स्तर तक ले जाना।
- महिला, आदिवासी, दलित तथा अल्पसंख्यकों के बीच सामाजिक एवं आर्थिक विकास करना।
- आदिवासी जीवन पद्धति के सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, संवर्द्धन करना। इसके लिए अध्ययन एवं शोध कार्य करना।
- सेकुलर समाज की स्थापना के लिए पहल करना।
- चेतना निर्माण के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण एवं संसाधन केंद्र की स्थापना करना।
- अध्ययन एवं शोध केंद्र, पुस्तकालय, दस्तावेज केंद्र, संग्रहालय, दृश्य श्रव्य केंद्र की स्थापना करना।
- स्थानीय तथा क्षेत्रीय इतिहास, संस्कृति, लोककला तथा दस्तकारी का दस्तावेजीकरण एवं संरक्षण।
- पूर्ण अलाभकारी तथा सेकुलर संस्थाओं को विकसित करना।

## वर्तमान कार्यक्षेत्र

- झारखंड (16 जिला, 28 प्रखंड, 800 गांव)

## वर्तमान कार्यक्रम एवं गतिविधियां

- स्वशासन एवं पंचायती राज
- महिला सशक्तिकरण
- फिल्म एवं संचार सामग्री निर्माण
- परंपरागत आदिवासी कला एवं संस्कृति पर शोध एवं अध्ययन
- कृषि एवं सतत् आजीविका
- बाल अधिकार
- अध्ययन, शोध एवं प्रकाशन
- ग्रीन एनर्जी एवं जलवायु परिवर्तन

**प्रकाशक :** संवाद, 104/ए, उर्मिला इन्क्लेव, पीस रोड, लालपुर, रांची

**मुद्रक :** आई.डी. पब्लिकेशन, रांची